



बाल साहित्य का मुख्य उद्देश्य : बालक का व्यक्तित्व निर्माण करना

माधुरी गौड़

शोधकर्ता, पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर

डॉ. मंजू चतुर्वेदी

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय, प्रोफेसर पैसिफिक अकादमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान

Paper Received On: 20 MAR 2025

Peer Reviewed On: 24 APRIL 2025

Published On: 01 MAY 2025

Abstract

चिल्ड्रन लिटरेचर यानी बाल साहित्य, बच्चों के मानसिक विकास को ध्यान में रखकर लिखा गया साहित्य है, जो उनके नैतिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास में सहायक होता है। इसमें कहानियाँ, कविताएँ, उपन्यास आदि शामिल होते हैं जो बच्चों को नए विचार, नैतिक मूल्य, सहानुभूति, सहयोग, आत्मनिर्भरता, विविधता की समझ, तथा समस्याओं से निपटने की क्षमता सिखाते हैं। यह साहित्य बच्चों की कल्पनाशक्ति को उड़ान देता है और उन्हें अच्छे-बुरे में फर्क करना सिखाता है। प्रमुख लेखक जैसे प्रेमचंद, समा शेखर, आदि ने बच्चों के चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास में योगदान दिया है।

छोटे बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर जो साहित्य लिखा जाता है वही बाल साहित्य है। इसके अंतर्गत रोचक बाल कहानियाँ और कविताएँ सम्मिलित हैं जो कि बच्चों के साथ सरल मन का दर्पण होता है। बाल गोपाल के अटखेलियाँ, बालसुलभ चेष्टाएँ, नटखटपन, कल्पनाशीलता, क्रीड़ाएँ आदि बाल साहित्य की जान होती हैं। बाल साहित्य मानव मन की सुंदरतम अभिव्यक्ति है। बालक कच्ची मिट्टी के समान होते हैं जिस प्रकार या आकार में ढाला जाए उसी में ढल जाते हैं। इस बात को दृष्टिगत रखा जाए तो बाल साहित्य बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। वर्तमान में बाल साहित्य भी परिस्थितियों के साथ बदल रहा है। तकनीकी के इस युग में बच्चे अधिकांश मोबाइल और कंप्यूटर पर बाल साहित्य पढ़ना पसंद करते हैं। उनका अधिकांशतः समय इन्हीं पर बीतता है अतः उनके व्यक्तित्व का, उनके बाल मन का निर्माता यह साहित्य खेल और मनोरंजन के रूप में ही उनके मन को भाता है। बच्चों की अपनी दुनिया होती है जिसमें मनोरंजन के साथ-साथ विस्मय, प्रश्नाकुलता, कल्पना, जिज्ञासा तथा बाल सुलभ प्रश्नों के उत्तर भी उन्हें मिले जिस साहित्य में बच्चों के इन प्रश्नों का सही जवाब

मिलते हैं वह साहित्य ही सही मायने में बाल साहित्य है और बच्चों के व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है। एक बालक के व्यक्तित्व का विकास उसके सर्वांगीण विकास पर निर्भर करता है।

यह साहित्य कहानियाँ, कविताएँ, और अन्य लेखों के माध्यम से बच्चों को नैतिक मूल्यों, सहानुभूति, समाजसेवा, और स्वाभाविक रूप से उनके संवादात्मक, बौद्धिक और सामाजिक विकास में मदद करता है। इसके माध्यम से बच्चे नये-नये विचारों को समझते हैं, अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का तरीका सीखते हैं, और आत्म-समर्थन और आत्म-संवेदना की दिशा में विकसित होते हैं।

बाल साहित्य बालक के व्यक्तित्व का निर्माण कई तरीकों से करता है:-

- **नैतिक अद्यात्मिक शिक्षा** : बाल साहित्य के माध्यम से, बच्चों को नैतिक मूल्यों का आदान-प्रदान होता है, जैसे कि सच्चाई, ईमानदारी, धर्म, समाजसेवा, और प्रेम।
- **सहानुभूति और उदारता की शिक्षा** : बाल साहित्य की कहानियों के माध्यम से, बच्चे दूसरों के साथ सहानुभूति और उदारता का महत्व समझते हैं।
- **विचारों को प्रोत्साहन देना** : बाल साहित्य बच्चों को नये-नये विचारों को समझने और स्वीकार करने की प्रेरणा देता है।
- **स्वतंत्र सोच का प्रोत्साहन** : बाल साहित्य के माध्यम से, बच्चों को अपने विचारों को व्यक्त करने की और स्वतंत्रता से सोचने की प्रेरणा मिलती है।
- **समस्याओं का समाधान** : कुछ कहानियाँ समस्याओं को हल करने के तरीके प्रस्तुत करती हैं, जिससे बच्चे समस्याओं को समझते हैं और उन्हें हल करने के लिए सक्षम होते हैं।
- **नैतिक मूल्यों का समझ** : बाल साहित्य की कहानियाँ नैतिक मूल्यों को समझाती हैं, जैसे कि सत्य, ईमानदारी, सहानुभूति, और धर्म। इससे बच्चे ठोस मूल्यों को समझते हैं और उन्हें अपने जीवन में अपनाते हैं।
- **स्वतंत्र सोच का विकास** : बाल साहित्य में प्रस्तुत विभिन्न कहानियाँ और पात्र बच्चों को अपने विचारों को स्वतंत्रता से व्यक्त करने की प्रेरणा देती हैं।
- **समस्या समाधान कौशल** : कुछ कहानियाँ समस्याओं के समाधान की प्रेरणा देती हैं, जिससे बच्चे समस्याओं को समझते हैं और समाधान के लिए उत्साहित होते हैं।
- **विविधता का समर्थन** : बाल साहित्य विभिन्न विषयों, भावनाओं, और विविध पात्रों का परिचय कराता है, जिससे बच्चे विश्व की विविधता को समझते हैं और सम्मान करते हैं।

इन सभी प्रक्रियाओं से, बाल साहित्य बच्चों के व्यक्तित्व का संवर्धन करता है और उन्हें समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करता है। इन सभी तत्वों के संयुक्त प्रभाव से, बाल साहित्य बालक के व्यक्तित्व का समृद्ध और संतुलित विकास करने में सहायक होता है।

बाल साहित्य की दुनिया बहुत व्यापक है और इसमें और भी अनेक पुस्तकें शामिल हैं। बालक के व्यक्तित्व निर्माण से संबंधित कुछ पुस्तकों की सूची इस प्रकार है। कुछ लोकप्रिय बाल साहित्य की पुस्तकें इस प्रकार हैं:-

‘बालक कृष्ण’ द्वारा सुदेन्दु घोष
 ‘मालगुडी डेज’ द्वारा रुस्तम और सोहराब भरुचा
 ‘चंद्रगुप्त और चाणक्य’ द्वारा प्रसन्न विरारा
 ‘पंचतंत्र की कहानियाँ’ द्वारा विष्णु शर्मा
 ‘बाल रामायण’ द्वारा तुलसीदास

ये कुछ प्रमुख पुस्तकें हैं, लेकिन इसके अलावा भी अनेक अन्य उत्कृष्ट पुस्तकें हैं जो बाल साहित्य की श्रेणी में आती हैं:-

1. ‘सफल बच्चे कैसे बड़े होते हैं’ – डॉ. लॉरेंस लेशन
2. ‘सात अद्भुत अद्भुत बच्चे’ – स्टीवन ग्लेजर
3. ‘बच्चों के साथ बेहतर बनने का रास्ता’ – अल्फ्रेड अड्लर
4. ‘खेल, विचार और बाल विकास’ – जॉन होल्ट
5. ‘बच्चों को समझना’ – जे.बी. वट्सन
6. ‘शिक्षा में प्रेम की भावना’ – आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय
7. ‘बच्चों का व्यक्तित्व विकास’ – एलिजाबेथ हुरलबर्ट
8. ‘बच्चे, जिन्दगी और अद्भुत जगत’ – अल्बर्ट एयंस्टीन
9. ‘आध्यात्मिक बच्चे’ – डॉ. वेयरन वियार
10. ‘बाल विकास और आत्म निर्माण’ – ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

ये पुस्तकें बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के महत्वपूर्ण विषयों पर आधारित हैं और उन्हें समझाने और समर्थ बनाने में मदद कर सकती हैं। इन पुस्तकों के अतिरिक्त हिंदी साहित्य में कई ऐसे महान लेखक हुए हैं जिनका बाल साहित्य बच्चों के व्यक्तित्व का बखूबी विकास करता है इन लेखकों में प्रमुख हैं— प्रेमचंद, क्षमा शर्मा, विमला भंडारी, जैनंद्र आदि। इन सभी साहित्यकारों में बालकों के बाल मनोविज्ञान को समझते हुए ऐसी कई रचनाओं की है जिनको पढ़कर आने वाली पीढ़ी में बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं।

प्रेमचंद का बाल साहित्य बच्चों के व्यक्तित्व का विकास करता है क्योंकि उनकी कहानियाँ जीवन के अलग-अलग पहलुओं को दर्शाती हैं, जैसे कि समाज में नैतिकता, ईमानदारी, साझेदारी, और समस्याओं का सामना कैसे किया जाता है। उनकी कहानियाँ बच्चों को सोचने और समझने की क्षमता विकसित करती हैं, साथ ही उन्हें सही और गलत के बीच अंतर खोजने में मदद करती हैं। इसके अलावा, प्रेमचंद की कहानियाँ बच्चों को समाज में सहभागिता के महत्व को समझाती हैं और उनकी

भावनाओं को विकसित करने में मदद करती हैं। इस तरह, वे उनके व्यक्तित्व के समृद्धि को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

क्षमा शर्मा की कहानियाँ बच्चों के व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनकी कहानियाँ बच्चों को नैतिक मूल्यों, संवेदनशीलता, समाजिक सहानुभूति, और सहयोग की महत्वपूर्णता को समझाती हैं। उनकी कहानियों में बालकों के चरित्र में समर्पण, सहनशीलता, और साहस के गुणों का प्रतिनिधित्व होता है। उनके किरदार बच्चों को अच्छे और बुरे कार्यों के बीच अंतर खोजने में मदद करते हैं और उन्हें सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित करते हैं। इस तरह, क्षमा शर्मा की कहानियाँ बच्चों को समझदार, उदार, और नेतृत्व की क्षमता से सम्पन्न व्यक्तित्व का निर्माण करने में मदद करती हैं।

विष्णु शर्मा के लेखन से बालकों के व्यक्तित्व का निर्माण उनकी कहानियों में उज्ज्वलता, संघर्ष, और सहानुभूति के माध्यम से होता है। उनकी कहानियाँ बच्चों को समस्याओं का सामना करने के लिए प्रेरित करती हैं और उन्हें संघर्ष के माध्यम से स्वयं को परिवर्तित करने की प्रेरणा देती हैं। उनकी कहानियों में विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के बाद बच्चे सीखते हैं कि संघर्षों का सामना करने में उन्हें कैसे सहायता मिलती है और कैसे वे अपनी स्थिति को सुधार सकते हैं। इस तरह, विष्णु शर्मा की कहानियाँ बच्चों में साहस, सहानुभूति, और समस्याओं का सामना करने की क्षमता को विकसित करती हैं।

जैनेंद्र की कहानियाँ बच्चों के व्यक्तित्व का विकास करती हैं क्योंकि उनकी कहानियाँ बच्चों को नैतिक मूल्यों, सामाजिक सहानुभूति, और आत्मविश्वास को समझाती हैं। उनकी कहानियाँ बच्चों को उच्च मानकों और ईमानदारी के महत्व को समझाती हैं, साथ ही उन्हें अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती हैं। जैनेंद्र की कहानियाँ बच्चों को सहनशीलता, संघर्ष, और सफलता की महत्वपूर्णता को समझाती हैं। उनके किरदार बच्चों को समस्याओं का सामना करने के लिए प्रेरित करते हैं और उन्हें सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित करते हैं। इस तरह, जैनेंद्र की कहानियाँ बच्चों के व्यक्तित्व को समृद्धि और संघर्ष की क्षमता से संजोते हैं।

विमला भंडारी की कहानियाँ बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनकी कहानियाँ बच्चों को जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और समाधान करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनके लेखन में बच्चों को सामाजिक न्याय, सहयोग, और सहानुभूति के महत्व को समझाते हैं। विमल भंडारी की कहानियाँ बच्चों को नैतिकता, ईमानदारी, और साझेदारी के मूल्यों का महत्व सिखाती हैं। उनकी कहानियों में चरित्रों के माध्यम से, बच्चे अच्छे और ठीक के बीच सही और गलत का अंतर समझते हैं और सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित करते हैं। इस तरह, विमल भंडारी की कहानियाँ बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में मदद करती हैं और उन्हें समझदार, उदार, और सहानुभूति से भरा व्यक्तित्व बनाने में सहायक होती हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं की बाल साहित्य बालक के व्यक्तित्व निर्माण में बहुत सहायक है जितना अधिक वह बाल साहित्य पड़ेगा उतना ही अधिक कुशल और सफल नागरिक बनेगा। न केवल बाल साहित्य बालक को शुद्ध राहत प्रदान करता है बल्कि उसके व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना पूर्ण योगदान देने के काबिल भी बनता है बड़ों के प्रति सम्मान छोड़ के प्रति स्नेह पशु पक्षियों और प्रकृति के प्रति दया भाव यह सब बाल साहित्य के अध्ययन से ही विकसित हो सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

“बाल साहित्य : समालोचनात्मक अध्ययन” – अच्युत शंकर भट्ट

“बाल साहित्य विचार-विमर्श” – सुरेन्द्र नाथ

“बाल साहित्य : उपनिवेश और रचना” – रविन्द्र नाथ

“बाल साहित्य का इतिहास और विकास” – मनोहर शर्मा

“बाल साहित्य का उद्दीपन” – रमेश चंद्र मिश्र

“बाल साहित्य एवं साहित्य की संगीत विज्ञान” – विमला भंडारी।